अध्याय : 4

दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित पारिवारिक, सामाजिक तथा अन्य जीवन-मूल्य

अध्याय : 4

दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में परिवर्तित पारिवारिक, सामाजिक तथा अन्य जीवन-मूल्य

भूमिका

परिवार मानव के जीवन को प्रभावित करने वाली अत्यन्त महत्वपूर्ण संस्था है। शायद मानव जाति के इतिहास की यह प्रथम संस्था है। हर एक युग में और काल में इसका अस्तित्व रहा है। संस्कृति और समाज का निर्माण भी समाज के कारण ही हुआ है। इसी कारण इन दोनों का अस्तित्व परिवार पर निर्भर है। कोई अन्य समुदाय परिवार के समान सार्वभौमिक नहीं है। बालक के जन्म और भरण-पोषण, शिक्षा-दीक्षा की जिम्मेदारी परिवार पर ही रहती है। भारतीय परंपरा के अनुसार विवाह एक पवित्र धार्मिक संस्कार है। परिवार में माता-पिता को देवी और देवता का स्थान दिया जाता था। परन्तु वर्तमान कालीन परिवारों में विवाह एक कॉन्ट्रैक्ट बन गया है। उसमें माता-पिता का दखल देना गैर माना जाता है। इतना ही नहीं तो विवाह होने के उपरान्त ही बेटा बहू को लेकर घर आता है। विवाह माता-पिता के मर्जी से नहीं, बेटा या बेटी के मर्जी से होने लगा है। परिणामतः पारिवारिक जीवन मूल्यों में परिवर्तन होने लगा है। नगरों और महानगरों में बढ़ते हुए औद्योगिक विकास के कारण जीवन मूल्यों में तेजी से परिवर्तन परिलक्षित होता है। परंपरागत संयुक्त परिवार टूटकर एकक परिवार का निर्माण होने लगा है। भौतिक आकर्षण, पाश्चात्य संस्कृति का स्वीकार आदि के कारण आत्मिक संबंधों में अवरोध उत्पन्न हो रहा है। इस पारिवारिक विघटन के मूल में नारी और पुरूष अपनी वैयक्तिकता और स्वतंत्रता को अत्यधिक महत्व देने लगे हैं। अर्थात भौतिक सुखों की लालसा,धन की अधिकता, धन का अभाव आदि अनेक कारण हैं कि जिसकी वज़ह से मूल्यों में तेजी से परिवर्तन होता

दिखाई देता है। नारी-पुरुष की अहंम् भावना इतनी बलवती हो चुकी है कि, जिससे परिवार उखड़ रहे हैं। पति-पत्नी का व्यक्तित्व खण्डित हो रहा है और ये खंडित व्यक्तित्व वाले लोग जिंदगी भर छटपटाहट के सिवा और कुछ प्राप्त कर नहीं पाते। विवाह पूर्व प्रेम, विवाहोत्तर पर-पुरुष, पर-स्त्री से प्रेम, स्वच्छन्द यौन-जीवन आदि के कारण विवाह मूल्यों में विघटन होता दिखाई देता है। माता-पिता के अपने पुत्र-पुत्रियों के साथ जो मधुर संबंध होने चाहिए, उसका भी अभाव परिलक्षित होता है। एक दूसरे के प्रति घृणा भाव, कटुता उनके संबंधों में दिखाई देती हैं। स्पष्ट है कि पारिवारिक जीवन-मूल्यों में परिवर्तन के साथ-साथ मूल्य संकट की स्थिति भी उत्पन्न हुई है। परम्परागत पारिवारिक मूल्य टूट रहे हैं। नये मूल्य बनने की प्रक्रिया ढो रही है जिनका प्रभावशाली रूप उभरकर सामने नहीं आया। यही स्थिति जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी पायी जाती है। परिणामतः उपन्यास साहित्य में इसका स्पष्ट प्रतिबिंब नज़र आता है। कुछ जीवन-मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है, तो कुछ जीवन-मूल्यों में संक्रमण भी परिलक्षित होता है, कुछ मूल्य विघटित भी हो गये हैं। नव-मूल्य का निर्माण भी हो रहा है। दीप्ति खण्डेलवाल के विवेच्य उपन्यासों में परिवर्तित पारिवारिक जीवन-मूल्यों का चित्रण प्राप्त होता है। विवाहपूर्व प्रेम, विवाहोत्तर प्रेम, दाम्पत्य संबंधों में परिवर्तन, अर्थासक्ति, प्रेम और यौन भावना के प्रति दृष्टिकोन, अर्थाभाव, विवाह संबंधी नयी दृष्टि, विवाह विच्छेद, विधवा नारी के जीवन-मूल्यों में परिवर्तन, अनमेल विवाह, त्रिकोणमिती जीवन, माता-पुत्री संबंधों में परिवर्तन, मातृत्व नव्य बोध आदि परिवर्तित जीवन-मूल्य दिखाई देते हैं।

"परिवार" शब्द की व्युत्पत्ति : अर्थ और परिभाषा

"परिवार" शब्द संस्कृत के "परि" उपसर्ग पूर्व "वृ" धातु में "घञ्" प्रत्यय के योग से बना है। "संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ" में "परिव्रियते अनेन इति परिवारः।"[1] सूत्र प्राप्त होता है। मानक हिन्दी कोश के अनुसार "पुं॰ (सं॰ परि वृ (ढकना) - घञ्) 1॰ एक ही पूर्व पुरुष के वंशज, 2॰ एक घर में और विशेषतः एक कर्ता के अधीन या संरक्षण में रहने वाले लोग। 3॰ किसी विशिष्ट गुण, संबंध आदि के विचार से चीजों का बनने वाला वर्ग। जैसे - आर्य भाषाओं का

परिवार (फैमिली)। 4. किसी राजा, रईस आदि के आगे-पीछे चलने या साथ रहने वाले लोग।"[2]

"हिन्दी विश्व कोश" के अनसार "परिवार साधारणतः पति-पत्नी और बच्चों के समूह को कहते हैं, किन्तु दुनिया के अधिकांश भागों में वह सम्मिलीत वास वाले संबंधियों का संबंध है, जिसमें विवाह और दत्तक प्रथा द्वारा स्वीकृत व्यक्ति भी सम्मिलीत है। सभी समाजों में बच्चों का पोषण परिवारों में होता है। बच्चों का संस्कार करने और समाज के आचार व्यवहार में उन्हें दीक्षित करने का काम मुख्य रूप से परिवार में होता है। इसके दारा समाज की सांस्कृतिक रियासत एक से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है। व्यक्ति की सामाजिक मर्यादा बहुत कुछ परिवार से ही निर्धारित होती है। नर-नारियों के यौन-संबंध मुख्यतः परिवार के दायरे में निबध्द होते हैं।"[3] प्रो.सत्यव्रत के शब्दों में - "परिवार एक ऐसा समूह है, जिसमें (क) स्त्री-पुरूषों का यौन-संबंध, (ख) विधिपूर्वक स्वीकार किया जाता है, (ग) इसे स्थिर बना दिया जाता है, (घ) इसमें सन्तान की व्युत्पत्ति, पालन तथा भरण-पोषण की जिम्मेदारी लेकर, (ड) स्त्री-पुरूष किसी स्थान पर साथ-साथ रहते हैं।"[4]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि, परिवार एक ऐसी संस्थाहैंजो जन्म से ही व्यक्ति जीवन के साथ संपृक्त है। मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि भी रही है। अतः मानव जीवन संचालित और नियामक बनाने में परिवार का महत्वपूर्ण योगदान रहता हैं। मानवीय संबंधों की आधार भीत्तियाँ परिवार की नींव पर ही बनती है।

विवाह पूर्व प्रेम और यौन-संबंध

दीप्ति खण्डेलवाल के विवेच्य हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण के अन्तर्गत चित्रित किए गये पात्रों के व्यक्तित्व में विवाह-पूर्व प्रेम और यौन-संबंध की चर्चा दिखाई देती है। वास्तव में परिवार में बेटे या बेटी का विवाह जिस नारी या पुरुष के साथ किया जाता है,उसी के साथ उसे प्रेम और यौन-संबंध

रखने की अनुमति धर्म द्वारा प्रदान की जाती है। परंतु विवेच्य हिन्दी उपन्यासों के पुरूष पात्र और नारी पात्र विवाह-पूर्व ही किसी नारी या पुरूष से प्रेम करने लगते हैं। इतना ही नहीं तो उनके साथ यौन-संबंध भी स्थापित करते हैं। श्लील-अश्लील, नीति-अनीति, धर्म-अधर्म, अमीर-गरीब, उच्च-नीच, जाति-धर्म आदि किसी भी प्रकार के सामाजिक विधि-निषेधों की परवाह न करके वे इसी क्षेत्र में आगे बढ़ते हैं। आधुनिक युग में युवा-युवतियों को बालिग होने पर अपनी मर्जी के अनुसार प्रेम और यौन-संबंध स्थापित करने के लिए मानो अनुमति मिली है। इसी कारण विवेच्य उपन्यासों में प्रस्तुत विषय को केंद्र में रखा गया है। विवाह-पूर्व प्रेम और यौन-संबंधों की चर्चा विवेच्य उपन्यासों में अधिकाधिक मात्रा में की गयी है। अब यौन-संबंध स्थापित करने के लिए परिवार की सदस्यों की अनुमति या यौन संस्कार की आवश्यकता महसूस नहीं की जाती। परिणामतः स्वच्छंद प्रेम और यौन-संबंधों की प्रवृत्ति बढ़ती नज़र आती है।

प्रिया

"प्रिया" उपन्यास की प्रिया शिक्षित नारी है। वह अपनी मर्जी के अनुसार देवदास नामक युवक को चाहने लगती है। देवदास को जीवन साथी बनाने का सपना भी देखती है। अपनी माँ को देवदास के बारे में सब कुछ बताती है, और एक दिन उसे घर भी ले जाती है। परन्तु माँ उसे देवदास से विवाह करने की अनुमति नहीं देती। परिणामतः प्रथम प्रेम में ठोकर खायी हुई प्रिया का व्यक्तित्व खण्डित होता है। आगे चलकर उसके पिताजी उसका विवाह अरूण आहुजा नामक युवक के साथ निश्चित करते हैं और विवाह निश्चिति के पश्चात उसके होने वाले पति के साथ उसे आठ दिन तक घूमने के लिए भेज देते हैं।[5] अरूण अहुजा उसका कौमार्य भंग कर, उसे गर्भवती बनाकर विदेश चला जाता है, जहाँ उसकी प्रथम बीवी और बच्ची थी। इस घटना से प्रिया और अधिक टूट जाती है। परंतु बाद में पुनश्च मनसिज की ओर आकर्षित होती है। इतना ही नहीं तो मनसिज को भी अपना शरीर सौंपती है। प्रिया बनने की चाह ने उसे लगातार तीन पुरूषों की ओर जाने के लिए विवश बनाया। परंतु प्रिया बनने के स्थान पर वह केवल शरीर

संबंध ही स्थापित कर सकी। प्रिया का यह आचरण उसके परिवर्तित जीवन-मूल्यों का बोध कराता है। शिक्षित लड़की होने पर भी परिस्थितिवश उसे जीवन-मूल्यों को तोड़-मरोड़ना पड़ा।

चित्रा

"प्रिया" उपन्यास की चित्रा नेता यशवंत और सौदामिनी की बड़ी बेटी है। वह अधिक पढ़ी-लिखी नहीं है। उसकी माँ दिन भर नौकरी करने जाती है और उसकी बहन पढ़ाई करने जाती है। युवती चित्रा इस परिस्थिति का लाभ उठाती है और उसकी ही गली में रहने वाले सुरेश के साथ फिल्म देखने जाती है। अब माँ उसे इस आचरण का दंड देना चाहती है तब वह अपनी और सुरेश की प्रेम की बात माँ को स्पष्ट रूप से बताती है। "माँ उसे रोकना चाहती है पर न वह माँ की बात मानती है न पिता की। परिवार वालों की उपेक्षा कर वह सुरेश के साथ चली जाती है। जिस परिवार में उसका भरण-पोषण हुआ उसी परिवार को एक क्षण में उसने त्याग दिया और प्रेमी सुरेश को अपनाकर चली गयी।

सिमी

"कोहरे" उपन्यास की नायिका सिमी मेजर सिन्हा की बेटी है। वह कालेज में पढ़ती थी, तब उसी कालेज के सहचारी प्रशान्त के प्रति उसके मन में आकर्षण निर्माण हो जाता है। प्रशान्त भी उसकी ओर आकर्षित था। अतः मन-ही-मन उसे जीवन साथी के रूप में देखने लगती है। परंतु प्रशांत के पापा और उसके पापा के बीच दुश्मनी होने के कारण अपना पहला प्रेम वह हृदय तक ही सीमित रखती है। तत्पश्चात अंग्रेजी के प्रोफेसर डा॰स्वरूप की ओर वह आकर्षित हो जाती है। यथार्थ में डा॰स्वरूप उससे दुगुनी आयु वाले थे। परंतु वे भी उसे पाने की कामना संकेतों से व्यक्त कर चुके थे। जब वह अपने पिताजी को यह बात बताती है, तब पिताजी उस पर चिल्लाते हैं और कहते हैं, "सिमी तुझे पता नहीं जिन्दगी क्या होती है ? ठीक रहने के लिए सेंटीमेटस्···· भावनाएँ भी काफी नहीं होती, ठोस जिंदगी को हवा में नहीं जिया जा सकता···फारगेट डा॰स्वरूप मेरी बेटी। मैं कभी तुझे डा॰स्वरूप से शादी की इज़ाजत नहीं दे सकता। "ही

इज् ट्वाइस योर एज।"[7] सिमी प्रेमभंग से उदास हो जाती है। विवाह-पूर्व प्रेम जब हो जाता है, तब उसकी परिणति अगर विवाह में नहीं होती तो वह पात्र निश्चित रूप से खण्डित हो जाता है। खण्डित व्यक्तित्व वाला बन जाता है। आधुनिक काल में उपन्यास साहित्य में विवाह-पूर्व प्रेम की चर्चा अधिक रूप में प्राप्त होती है।

श्यामा

"कोहरे" उपन्यास की श्यामा गाँव के बड़े जमींदार की बेटी है। वह परिवार वालों की इच्छा के विरूद्ध माधव नामक युवक से प्रेम करती है। परंतु परिवार वाले उसका विवाह मेजर सिन्हा के साथ तय करते हैं। जब उसका विवाह हो जाता है तब विदा के समय माधव उसे मिलने आता है और उसे बाहों में भरकर रो पड़ता है। जेब से एक अंगुठी निकालता है और उसे पहनाते हुए कहता है,"श्यामा अंगुठी तो चांदी की है, लेकिन मेरा प्यार सोने जैसा है।"[8] श्यामा और माधव एक दूसरे के लिए तड़पते रहे, परंतु जब परिवार वाले उसका विवाह दूसरे पुरूष के साथ कर देते हैं। श्यामा का विवाह-पूर्व प्रेम असफल प्रेम रहा है। फिर भी वह पूरी निष्ठा के साथ पत्नी धर्म निभाती है। पति उसे पैरों की जूती के बराबर का स्थान देता है। पर वह हमेशा मौन रखकर पति के अत्याचार सहती रहती है।

मेयर नीलकान्त

"प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास का नायक मेयर नीलकान्त यथार्थ में एक गरीब परिवार का लडका है। जब वह राय बहादूर मेहता के यहाँ काम करता था तब उसकी होशियारी देखकर मेहता बहुत प्रसन्न होते हैं, और मन-ही-मन निश्चय करते हैं कि, इसे ही अपना दामाद बनाया जाय। परंतु नीलकांत शुभ्रा पटेल नामक लड़की को चाहता था। इतना ही नहीं तो उसे पत्नी बनाने का वचन भी देता है। उसके परिवार का बोझ उठाने के लिए वह तैयार था। उसका चाँदनी जैसा उज्वल रूप उसे बेहद पसंद था।[9] परंतु अपने हृदय की यह कामना उसे दबाए

रखनी पड़ती है, क्योंकि जायदाद का मालिक बनने की हवस ने उसे अंधा बना दिया था। वह शुभ्रा पटेल का प्रेम ठुकराकर सोने की प्रतिमा अचला को पत्नी बनाकर जीवन-यापन करने लगते हैं। आधुनिक काल के युवक विवाह-पूर्व प्रेम करते हैं परंतु उस प्रेम में ठोकर भी खाते हैं।

अचला

अचला रायबहादुर हरिश्चंद्र की इकलौती बेटी है। वह विवाह-पूर्व ही विनय नामक युवक से परिचित हो जाती है। उसका यह परिचय प्रेम में परिवर्तित हो जाता है। वह उसके साथ विवाह करना चाहती थी, लेकिन उसके पापा मना कर देते हैं। अचला को अपनी जायदाद के प्रति सचेत करते हुए समझाते हैं कि, दामाद का होशियार होना अत्यंत आवश्यक है। अतः वह पापा की बात मान लेती है और अपने जीवन में हृदय का स्वामी अलग और घर का स्वामी अलग इस रूप में जीवन-यापन करती है।

संक्षेप में विवेच्य सभी पात्र विवाह-पूर्व प्रेम संबंध रखते हैं, तो कुछ पात्र विवाह-पूर्व यौन-संबंध भी रखते हैं। परिवार वालों की परवाह न करते हुए यह पात्र स्वच्छंद रूप से प्रेम और यौन-संबंध स्थापित करते हुए दिखाई देते हैं। उनका यह आचरण परिवर्तित पारिवारिक जीवन-मूल्य का ही द्योतक है।

विवाहोत्तर प्रेम और यौन-संबंध

विवेच्य उपन्यासों में ऐसे भी पात्र दिखाई देते हैं, जो विवाहोपरान्त अन्य पुरूष या स्त्री से प्रेमसंबंध स्थापित करते हैं और बाद में उन्हीं स्त्री या पुरूष से यौन-संबंध स्थापित करते नज़र आते हैं। उनका यह आचरण विवाह संस्कार को ठुकराने वाला साबित होता है क्योंकि भारतीय संस्कृति में विवाहोपरान्त पति-पत्नी एकनिष्ठता को महत्वपूर्ण जीवन-मूल्य घोषित किया है। लेकिन आधुनिक युग में इस मूल्य में परिवर्तन आ गया है। कहीं कहीं तो इस मूल्य का विघटन भी दिखाई देता है। अब पत्नी खुलकर अपने पति को अपने प्रेमी के बारे में बताती भी है और उस प्रेमी के साथ यौन-संबंध स्थापित भी करती है। पति भी पत्नी

के सामने पर-नारी को बाहों में लेकर नाचता है, गाता है और रंग-रेलियाँ मनाता है। संक्षेप में विवेच्य उपन्यासों में यह भी दिखाई देता है कि, चाहे पुरुष हो या नारी वह मनोनुकुल प्रेम और यौन-संबंध स्थापित करना चाहते हैं। इस उन्मुक्त आचरण के कारण परिवार संस्था की नींव उखड़ने का संकट निर्माण होने लगा है।

अरूण आहुजा

"प्रिया" उपन्यास का अरूण आहुजा उद्योगपति श्रीराम आहुजा का पुत्र है। पूँजीपति आहुजा विदेश में निरन्तर आता जाता रहता है। विदेश में उसकी पत्नी और बच्ची रहती है, जब वह भारत में आता है, तब पुनश्च प्रिया नामक लडकी के साथ धूमधाम से अपनी ऐंगेजमेंट करता है।[10] इतना ही नहीं तो उस नियोजित वधू को आठ दिन तक बिना विवाह किए अपने पास होटल पर रखता है और उससे अवैध संबंध स्थापित करता है। उसकी यह प्रवृत्ति पाश्चात्य प्रभावों के कारण तथा स्वच्छंद काम-लालसा के कारण उद्‌भूत लगती है। धनवान लोग धन की नशा के कारण जीवन-मूल्यों को केवल परिवर्तित ही नहीं कर रहे तो उन मूल्यों का विघटन भी करते दिखाई देते हैं। आहुजा जैसे पूँजीपति न जाने समाज की कितनी प्रियाओं को अभिशप्त जीवन जीने के लिए मजबूर बनाते हैं। अर्थाधिकता के कारण तथा अर्थ लाभ के लिए वे नारी को उपभोग का साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं, और कार्यसिध्दी के पश्चात उन नारियों की ओर ध्यान तक नहीं देते।

सौदामिनी

"प्रिया" उपन्यास की सौदामिनी पति के रूप में एक नेता को चुनती है। परंतु वह नेता, मानव के स्थान पर दानव ही निकलता है। अतः उसे पति को त्यागकर पिता के घर में सहारा लेना पड़ता है। उसके अंतस् की प्रियत्व की कामना अतृप्त रहती है। उसका व्यक्तित्व खंडित होता है। उसके जीवन में केशवजी नामक पुरूष का प्रवेश होता है। अर्थात दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। वास्तव केशवजी भी विवाहित थे, दो बच्चों के पिता थे। पर वे सौदामिनी के प्रेम के खातिर उनका त्याग करने तैयार हो जाते हैं। केशवजी का यह विचार यथार्थ

में नहीं आया पर यह सोच भी कितनी गलत है, इसका बोध सौदामिनी को हो जाता है, और वह उनके प्रस्ताव को ठुकराती है। दोनों की सोच वास्तव में पारिवारिक मूल्यों को धक्का देने वाली ही है। परंतु सौदामिनी के विवेक ने उन्हें निर्णय लेने पर साथ दिया। अतः एक परिवार उखड़ने से बचा। अध्यापक लोगों की अगर यह धारणा रही तो यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि वर्तमान कालीन अध्यापक भी जीवन-मूल्यों में परिवर्तन के लिए जिम्मेदार हैं। अतः छात्र वर्ग से क्या उम्मीद की जाय ?

यशवंत

"प्रिया" उपन्यास के यशवंतजी शहर के प्रतिष्ठित नेता है। उनका विवाह एक जमींदार की लड़की के साथ होता है। परन्तु विवाहोपरान्त भी उनकी नज़र पर-नारियों की ओर जाती रहती है। एक दिन एक स्कुल के लड़की के भाषण और सौंदर्य पर आसक्त होकर उसके साथ विवाह कर लेते हैं। उनके विवाह का बोलबाला होता है। परंतु यथा राजा तथा प्रजा के अनुसार लोग भी इस निंदनीय कृत्य की प्रशंसा करने लगते हैं। इतना ही नहीं तो नारियाँ भी कहती हैं कि, "यशवंतजी ने लोक अपवाद की परवाह न कर एक साधारण कन्या का उद्धार किया है, पुरूष हो तो ऐसा हो, यदि प्रेम करे तो विवाह भी करे....।"[11] बड़ों की बात कभी गलत नहीं मानी जाती। इस दृष्टिकोन से समाज उनके विवाह पर अपनी स्वीकृति दे देता है। लेकिन उसकी प्रथम पत्नी अन्याय, अत्याचार से पागल बन जाती है। उसके प्रति कोई नहीं सोचता। समाज के रक्षक नेता ही अगर ऐसा आचरण करेंगे तो समाज के बारे में क्या कहा जाए। अर्थात जनता के हितचिंतक ही जीवन-मूल्यों में परिवर्तन ही नहीं विघटन करने लगे तो, सामाजिक स्तर का गिरना स्वाभाविक है। सौदामिनी को विवाह के नाम पर अपनी वासना का शिकार बनाते हैं, और अपने घर आए हुए अतिथि को भी काम तुष्टि के लिए सौदामिनी के देह सौंपते हैं। नेता यशवंत ने विवाहोत्तर पुनर्विवाह तो किया, परन्तु द्वितीय पत्नी को पत्नी के स्थान पर मानो वेश्या का स्थान दिया। उनका यह आचरण पारिवारिक मूल्य विघटन का द्योतक है।

मेजर सिन्हा

"कोहरे" उपन्यास के मेजर सिन्हा का विवाह एक जमींदार बेटी के साथ हो जाता है। उनके दो संतान हैं - निशीथ और सिमी। सिन्हा की पत्नी गाँव की भोली-भाली नारी है। पति को परमेश्वर मानकर चलने वाली है। लेकिन मेजर सिन्हा को उसका चाल-चलन फुहड़ लगता है। वे हमेशा पत्नी पर रोब जमाते रहते हैं। उसे टोकते रहते हैं। इतना ही नहीं तो उसके सामने अनेक नारियों के साथ लगाव भी रखते हैं। बुढ़ापे की उम्र में भी वे मनोरमा नामक विवाहित नारी से प्रेम करने लगते हैं।[12] मनोरमा तीन बच्चों की माँ है। पर वह भी मेजर के प्रेम में दीवानी बन चुकी है। आधुनिक सोसायटी के ये लोग किसी भी उम्र में अपना घर उजाड़ने की परवाह नहीं करते। उनका यह आचरण पारिवारिक मूल्यों को विघटित करने वाला है। परिणामतः इनके आचरण से युवा पीढ़ी पर अनायास संस्कार हो जाते हैं, जिसकी वज़ह से युवा पीढ़ी में भी उत्शृंखलता की भावना बढ़ती नज़र आती है।

सिमी

"कोहरे" उपन्यास की सिमी का सुनील के साथ विवाह होता है परन्तु विवाहोपरान्त सुनील सिमी के व्यक्तित्व को कुचलने का प्रयास करता है। जिसकी वज़ह से दोनों में संघर्ष छीड़ जाता है, और संघर्ष की समाप्ति तलाक में होती है। तलाक लेने के उपरान्त सिमी की माँ उसे पुनश्च प्रशांत के बारे में सोचने के लिए कहती है, तब वह जिंदगी को सहारा प्राप्त करने के लिए क्यों न हो प्रशांत की ओर आकर्षित होती है और पुनः उसके साथ विवाहबद्ध होने की कामना करती है। इस कामना में वह सफल भी बनती है।

निशीथ

"कोहरे" उपन्यास का निशीथ एंजिला के साथ रजिस्टर विवाह करता है और अपने वैवाहिक जीवन में असफल होकर वापस लौटता है। घर आने के बाद अर्थात विदेश से लौटने के बाद वह पुनश्च माया नामक लड़की से प्यार करने लगता है। वह अपनी नई जिंदगी शुरू करने के लिए पुनश्च तैयार हो जाता है।

यह उसकी और बहन की बातों से स्पष्ट हो जाती है। वह बहन को कहता है, "बंदा तो सीधे-सीधे पिएगा पिलाएगा भरभर के जाम प्यालों के····आँखों के। यु नो माया चव्हाण····।"[13] निशीथ का यह कथन आधुनिक युवा पीढ़ी की मनोवृत्ति पर प्रकाश डालने वाला है। आधुनिक युवा पीढी पाश्चात्य भोगवादी संस्कृति से प्रभावित है। खाना,पीना और रंगरेलियाँ मनाना यही निशीथ का काम है। विवाह विच्छेद होने के उपरान्त वह पुनश्च दूसरी लडकी को जीवन में प्रवेश देता है। वह भी केवल अपनी प्यास बुझाने के लिए उसका यह आचरण विवाह-मूल्य परिवर्तन का सूचक है।

अचला

"प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास की अचला नीलकांत से तो विवाह करती है, परंतु अपने प्रथम प्रेमी से प्रेम और यौन-संबंध रखती है। पति को स्पष्ट शब्दों में कहती है, "मैंने उसे भूलाने की कसम नहीं खाई है।"[14] अचला का यह कथन विवाह मूल्य में विघटन की स्थिति पैदा करने वाला है। अचला की दृष्टि से विवाह पवित्र धार्मिक बंधन नहीं तो पिता की जायदाद की खातिर किया गया एक सौदा है। अतः वह किसी भी विधि-निषेधों की परवाह न करते हुए विनय के साथ घूमती-फिरती है और प्रेम और यौन-संबंध भी स्थापित करती है।

मेयर नीलकान्त

मेयर नीलकान्त शहर का प्रतिष्ठित आदमी है। वह अचला नामक धनवान की बेटी से विवाह करता है। परंतु अचला से वह प्रियत्व प्राप्त नहीं कर सका, क्योंकि अचला किसी दूसरे से प्यार करती थी। एक दिन उसकी नज़र अचला की सेविका जया पर पड़ जाती है, जया बाल-विधवा नारी थी, वह अपनी मर्जी के साथ अपने स्वामी को देह सौंपती है और एक बच्चे की माँ बनकर गाँव चली जाती है। जया के पश्चात नीलकान्त वेश्या मोतीबाई के घर जाने लगता है, और उसे नारित्व का रूप देना चाहता है "एक वेश्या की आँखों में सौदा नहीं, नारी का समर्पण देखना चाहता था···और उसे एक पुरूष को स्वीकार देना चाहता था।"[15] नीलकान्त का यह आचरण पारिवारिक मूल्यों को तिलांजली देने वाला है, वह चार

नारियों के जीवन में आता है। परंतु उसकी प्यास अतृप्त ही रहती है। विवाह केवल सौदा बन जाता है, और इसीकारण वह उन्मुक्त आचरण करता है।

अर्थासक्ति के कारण परिवर्तित जीवन-मूल्य

वर्तमान युग अर्थप्रधान युग है। अर्थ के खातिर पति-पत्नी सबंधों में भी परिवर्तन नज़र आता है। दाम्पत्य संबंध में एकनिष्ठता, ममता, सहानुभूति, प्रेम आदि भावनाओं का अभाव दिखाई देता है। पति अपने व्यवसाय के लिए अपनी पत्नी से लाभ उठाना चाहता है। दाम्पत्य संबंधों में व्यावसायिकता आना मूल्य परिवर्तन का ही द्योतक है। केवल अर्थ के लिए किसी पुरुष को गले मढ़ाना अनुचित है और अर्थ अभाव के कारण किसी दुगुनी आयुवाले वर का स्वीकार करना यह प्रवृत्ति भी दीप्ति खण्डेलवाल के विवेच्य उपन्यासों में दिखाई देती है।

अचला

"प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास की अचला नीलकांत से विवाह करती है। पर उसका यह विवाह केवल अर्थ के खातिर था। वह न तो धन को छोड़ना चाहती थी और ना ही प्रेमी को। अतः नीलकांत से वह कॉन्ट्रैक्ट करती है कि तुम मेरे सिर्फ जायदाद के मालिक होंगे मेरे हृदय का मालिक तो विनय ही रहेगा। अर्थात पति अलग और प्रेमी अलग ऐसी दोहरी जिंदगी वह अर्थ के कारण जीती है। अपने पति को भी आज़ादी देती है कि, "तुम भी अपनी गुजरातीन से संबंध रख सकते हो।"[16] अर्थ के कारण आज मानवीय रिश्तों में परिवर्तन होने लगा है। पति-पत्नी संबंधों की अपेक्षा पैसा ही जीवन का सर्वश्रेष्ठ मूल्य बन गया है, और इसी मूल्य को बनाए रखने के लिए विवाहोत्तर जीवन-मूल्यों को तोड़ा-मरोड़ा जाता है।

प्रिया

आज परिवार में बेटी का विवाह करते वक्त अर्थ को प्रधानता दी जा रही है। लड़का कितने ही गुणों से संपन्न क्यों न हो, अगर उसके पास धन नहीं, है तो परिवार वाले उसकी उपेक्षाकरते हैं, और धनवान के पीछे भागते नज़र आते हैं। "प्रिया" उपन्यास की प्रिया का हाथ माँगने के लिए देवदास नामक लड़का

आता है। वह प्रिया को बेहद चाहता था। परंतु वह निर्धन था। अतः उसकी माँ स्पष्ट शब्दों में कहती है कि, "क्या वह केवल प्यार से तेरी आवश्यकताएँ पूरी कर सकेगा, क्या प्यार से तेरा पेट भर सकेगा, प्यास बूझा सकेगा, तन ढक सकेगा··· फिर बाल-बच्चे होंगे तो पाल सकेगा ? तुझसे प्यार का निर्वाह नहीं, जिंदगी का निर्वाह कर सकेगा - एक पुरूष की तरह ? तुझे सुरक्षा दे सकेगा, छाँह दे सकेगा।"[17] उपर्युक्त कथन वर्तमान कालीन अर्थप्रधान युग के अनुसार है। सौदामिनी अपनी बेटी के प्यार का गला केवल इसलिए घोंटती है कि उसका प्रेमी धनवान नहीं था। उसके व्यक्तित्व में अन्य सभी गुण दिखाई देते थे, परंतु केवल एक बात उसके पास नहीं थी कि वह है धन। धन का अभाव उसे प्यार की कुर्बानी देने पर विवश कर देता है।

विवाह संबंधी नयी दृष्टि

भारतीय संस्कृति में विवाह एक पवित्र धार्मिक संस्कार है। परंतु इस धार्मिक संस्कार के पीछे अब मनुष्य विविध दृष्टिकोन रखने लगा है। दीप्ति खण्डेलवाल ने इन दृष्टिकोनों की चर्चा विवेच्य उपन्यासों में की है। कुछ लोग संसार की नज़रों में ऊँचा उठने के लिए गरीब परिवार की लड़की से विवाह करते नज़र आते हैं। कुछ लोग व्यापारिक मुनाफा ध्यान में रखकर विवाह तय करते हैं। कुछ लोग धन प्राप्ति के लिए विवाह करते हैं तो कुछ लोग प्रतिदंदी को चूप करने के लिए विवाह करते हैं। विवाह के प्रति ये बदलती धारणाएँ हैं। वास्तव में विवाह तो दो आत्माओं का पवित्र मिलन होता है, परंतु अब विवाह में यह दृष्टिकोन दिखाई नहीं देता। वैयक्तिक स्वार्थ हेतु अब दो आत्माओं को जान-बूझकर बाँधने का प्रयास किया जाता है।

यशवंत

यशवंत राजनीतिक नेता है। जहाँ भी जाते हैं वहाँ उन्हें राजनीतिक लाभ और हानी के प्रति सोचते हैं। एक दिन स्कुल के ट्रस्टी के नाते वे स्कुल में पुरस्कार प्रदान करने के लिए जाते हैं, और वहाँ सौदामिनी का वक्तृत्व सुनकर और सौन्दर्य देखकर उसकी ओर आकर्षित होते हैं और उससे भी महत्वपूर्ण बात यह

थी कि सौदामिनी एक अपाहिज बुढ्ढे की इकलौती बेटी थी। अतः इस विवाह के पीछे उनका मंतव्य था कि, समाज कहेगा कि इतने बड़े नेता ने एक अनाथ कन्या का उद्धार किया और वे संसार की दृष्टि में, समाज की दृष्टि में ऊँचे उठ जाएंगे और हुआ भी वैसा ही। लोगों के लोकोपवाद की परवाह न कर आर्य समाजी रीति से उसके साथ विवाह करते हैं। यहाँ विवाह के पीछे अनाथ लड़की का उद्धार यह सचमुच वैवाहिक जीवन सुख प्राप्त करने का उद्देश्य दिखाई नहीं देता तो केवल अपनी वासना पूर्ति और राजनीतिक उन्नति को ध्यान में रखकर उसे अपनाया। विवाह के बारे में यह दृष्टि परिवर्तित जीवन-मूल्य दृष्टि है। इसीकारण लगता है कि विवाह अब पवित्र धार्मिक संस्कार न रहकर समाज के सामने अपनी महत्ता बढ़ाने का साधन मात्र बन गया है।

नेता यशवंत सौदामिनी की बेटी प्रिया का विवाह भी व्यापारिक और राजनीतिक दृष्टिकोन को ध्यान में रखकर तय करते हैं। वे अपनी बेटी का हाथ श्रीराम आहुजा के हाथ में इसलिए देते हैं, कि आहुजा के साथ मिलकर एक नयी क्लॉथ मिल का निर्माण कर सके। बेटी को एंगेजमेंट का लालच दिखाकर अरूप आहुजा को सौंप देते हैं। नतीज़ा यह होता है कि प्रिया विवाह-पूर्व ही गर्भवती हो जाती है। यह क्रूर पिता उसे अॅबॉर्शन के लिए दो हजार रूपये भेजता है, और अपना पितृ धर्म अदा करता है। यशवंत का यह दृष्टिकोन मानवता को कलंकित करने वाला है। उसने अपने राजनीतिक जीवन में न जाने कितनी सौदामिनियों को और कितनी प्रियाओं को तिल-तिल गलकर जलने पर मजबूर किया होगा। यशवंत के मन में विवाह यह एक खेल था। जिससे समाज में प्रतिष्ठा बढ़ सके, राजनीतिक लाभ हो सके तथा अपने अतिथियों को उस विवाह से प्राप्त लड़की पेश कर सके।

रायबहादुर मेहता

रायबहादुर मेहता शहर के धनवान आदमी थे। उन्हें केवल एक ही बेटी थी। अतः उनके मन में चिंता रहतीहै कि इस अपार वैभव का स्वामी किसे बनाया जाए। जब नीलकांत मेहता उनकी नज़रों में भर जाता है तब वे अपनी बेटी का हाथ उसके हाथ में देकर उसे अपने जायदाद का स्वामी बनाना चाहते

हैं। यथार्थ में उनकी बेटी अचला और नीलकांत दोनों अपनी मर्जी के अनुसार अपने-अपने प्रेमी और प्रेमिका के साथ वादा करते रहे।लेकिन रायबहादुर के कारण वे वादे उन्हें तोड़ने पडे और विवाह को एक सौदे के रूप में स्वीकारना पडा। नतीजा यह होता है कि अचला और नीलकांत में प्रेमभाव निर्माण नहीं होता और अंत में अचला आत्महत्या करने पर मजबूर बन जाती है। बेटी की तो जान चली जाती है परंतु पिता का पैसा सुरक्षित रहता है। इस परिवर्तित दृष्टिकोन से सवाल यह निर्माण होता है कि मनुष्य के लिए पैसा है या पैसे के लिए मनुष्य। पर पूँजीपति के जगत् में पैसा ही इस संसार का सर्वश्रेष्ठ रिश्ता है। इसके आगे सभी मानवीय रिश्ते-नाते खोखले होते है।

अपर्णा चटर्जी

"कोहरे" उपन्यास की अपर्णा चटर्जी पढ़ी-लिखी लडकी है। वह मेजर सिन्हा के साथ केवल इसलिए विवाह करना चाहती थी कि मेजर सिन्हा की आधी प्रॉपर्टी उसे प्राप्त हो जाय। परंतु जब मेजर सिन्हा इस बात को नकार देते हैं, तब अपर्णा अपना इरादा बदल देती है। आज भी संसार में मेजर जैसे बड़े ओहदे वाले लोग अपने बेटे-बेटियों को संतान होने के उपरान्त भी पुनर्विवाह करने की कामना रखते हैं। यह पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन का ही द्योतक है।

शुभ्रा पटेल

"प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास की शुभ्रा विवाह को एक सौदा मानती है क्योंकि विवाहपूर्व ही उसका व्यक्तित्व खण्डित हो जाता है। अब केवल माँ और भाइयों के लिए जीवन में किसी को स्थान देना चाहती है। वह अपने से दुगुने आयुवाले कोहली के साथ केवल इसी कारण विवाह करती है कि कोहनी ने उसकी बूढी माँ और दोनों छोटे भाईयों को सहायता करने की जिम्मेदारी उठायी। उसके विवाह के कारण माँ चैन से जीने लगी और दोनों भाई पढ़ाई पूरे कर सके।[18]

दाम्पत्य संबंधों में परिवर्तन

दाम्पत्य संबंध परिवार संस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। वह समुची परिवार संस्था की आधारशीला भी है। जब इन संबंधों में कटुता निर्माण होती है तो परिवार बिखर जाता है। अगर इन संबंधों में मधुरता रहती है तो जीवन स्वर्ग बन जाता है और अगर कटुता निर्माण होती है तो जीवन नर्क बन जाता है। वर्तमान कालीन पति-पत्नी संबंधों में आत्मसुख, अर्थ, पर-पुरूष या पर-स्त्री आगमन आदि अनेक कारण हैं जिसकी वज़ह से दाम्पत्य संबंध में परिवर्तन नज़र आता है। कभी-कभी एकनिष्ठता के स्थान पर अनेकनिष्ठता, सहचारिणी के स्थान पर दास्यत्व, पति की ओट में धन का रखवाला आदि अनेक आयाम इन संबंधों में नजर आते हैं जिससे पारिवारिक जीवन मूल्यों में परिवर्तन परिलक्षित होता है।

सिमी और सुनील

"कोहरे" उपन्यास का सुनील और सिमी शिक्षित पति-पत्नी हैं, परंतु जीवन की यथार्थता ने उन्हें मूल्य विघटन पर उतर लाया है। सुनील प्रारंभ से ही भ्रमर पद्धति का युवक था। परंतु सिमी को वचन देता है कि विवाह के बाद वह किसी भी अन्य नारी को अपने जीवन में स्थान नहीं देगा। जितनी आसानी से वादा किया था उतनी-ही-आसानी से तोड़ भी दिया। पत्नी की अनुपस्थिति में वह इरा घोष नामक नारी को अपने घर में ले आता है और अपने ही बेडरूम में उसके साथ रंगरेलियाँ मनाता है।[19] पति का यह अनैतिक आचरण देखकर सिमी संतप्त हो उठती है, और पति को कानून की धमकी देती है, लेकिन सुनील इन धमकियों से डरने वाला आदमी नहीं था। वह उसे उत्तर देता है कि मैं आपको डाइवोर्स का सूट पहले ही फाइल कर चुका हूँ।[20] विवाह जैसा जनम्-जनम् का बंधन अब क्षणों-क्षणों का बंधन बनता जा रहा है। सुनील अपनी अतृप्त प्यास के कारण विवाह बंधन तोड़ने पर उतर आता है। वह उसे आझाद करने की बात करता है। सुनील का आचरण पाश्चात्य भोगवादी संस्कृति से प्रभावित है। भारतीय परंपरा नुसार वह विवाह तो करता है, परंतु भोगवादी प्रवृत्ति के कारण उसे तोड़ता भी है। दाम्पत्य जीवन में विवाह-विच्छेद की प्रवृत्ति दिन-ब-दिन बलवती होती

जा रही है। मनुष्य नीति और अनीति का विवेक ज्ञान भूलता जा रहा है। परिणामतः विवाह विच्छेद की मात्रा बढ़ने लगी है। सुनील और सिमी कानून विवाह-विच्छेद कर देते हैं।

सौदामिनी और यशवंत

"प्रिया" उपन्यास की सौदामिनी स्कुल के ट्रस्टी नेता यशवंत की पत्नी बन जाती है। परंतु जब उसके पति उसे अवैध यौन-संबंध रखने पर मजबूर करते हैं, तब उसके मन में पति के प्रति घृणा भाव निर्माण हो जाता है और वह पति की हवेली छोड़ अपने पिता की कुटिया में आ जाती है। यशवंत जैसे प्रतिष्ठित लोग किस तरह पत्नी का शोषण करते हैं और उन्हें अभिशप्त जिंदगी जीने पर मजबूर करते हैं, यह बात प्रस्तुत प्रसंग से स्पष्ट हो जाती है। सौदामिनी जीवन के अंत तक नेता यशवंत को अपने जीवन में प्रवेश नहीं देती। वह उनसे तलाक भी नहीं लेती और उनकी पत्नी बनकर उनके घर में भी नहीं रहती। आत्मनिर्भर बनकर जीवन यापन करती है, पर पति के आगे झुकना नहीं चाहती। पति-पत्नी संबंधों में अंत तक विच्छेद की स्थिति बनी रहती है।

नीलकांत और अचला

"प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास का नीलकांत और अचला का दाम्पत्य जीवन वास्तव में प्रेमहीन दाम्पत्य जीवन था, क्योंकि विवाहपूर्व दोनों भी एक-दूसरे के प्रति उदास थे। लेकिन परिस्थितिवश वे विवाह बंधन में बंध जाने का निर्णय लेते हैं। परंतु थोडे ही दिनों में दोनों का एक-दूसरे का आचरण अखरता है। अचला नीलकांत की मर्जी के खिलाफ प्रेमी से यौन प्राप्ति करना चाहती है। नीलकांत के पौरूषत्व को मानों उसने डंख मारने की ठान ली थी। परिणामतः वह उसे गर्भ गिराने पर मजबूर करता है। परिणामतः वह आत्महत्या कर अपना वैवाहिक जीवन समाप्त कर देती है। अचला की आत्महत्या विनय को वेदना पहुँचाती है, तो नीलकांत को बंधन मुक्ति का एहसास। सवाल यह उठता है, कि विवाह जैसे पवित्र बंधन में बँधकर भी न बँध जाना और विवाह बंधन से दूर रहकर भी आत्मिक रूप से बंध जाना। इस चक्रव्युह से न निकली अचला, अंत में दम तोड़ने के सिवा और

कुछ नहीं कर पाती। परिवार में जब विवाह बंधन लाद दिया जाता है तब उसका नतीजा क्या होता है ? यह अचला और नीलकांत के विवाह से स्पष्ट होता है। दाम्पत्य संबंधों में विघटन के लिए पारिवारिक सदस्य भी जिम्मेदार रहते हैं। यह बात इस दम्पति के जीवन से स्पष्ट हो जाती है। दोनों भी विवाहोपरान्त स्वेच्छाचरण करते रहे, लेकिन जब स्वेच्छाचरण की चरमसीमा हो जाती है तब अपने आप रास्ता निकल आया है। चाहे नर हो या नारी उसे जीवन की ओर केवल उपभोग की दृष्टि से देखना अनुचित होगा। उपभोग तो जीवन का बस एक अंग है। अतः अगर दम्पति जीवन में अन्य अंगों की ओर भी महत्व देंगे तो अपने-आप दाम्पत्य संबंधों में मधुरता निर्माण होगी, अन्यथा इसके अभाव में दोनों का जीवन नरक सदृश्य बनेगा।

उमाकांत और गंगा

"प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास का उमाकांत और गंगा का दाम्पत्य जीवन अविश्वास और संदेह की नींव पर चल रहा था। अगर पति-पत्नी के मन में एक-दूसरे के प्रति शक निर्माण हो जाता है, तो दाम्पत्य जीवन विषमय बन जाता है। गंगा अपने विवाह-पूर्व प्रेमी कान्हा के परिवार को बचाने के लिए पति को पूछे बिना एक माह की रसद दे देती है। उसके पति को जब यह बात मालूम होती है, तब उसे मार-पीट करता है और कहता है कि, "क्यों री कुलटा! हो गया तेरा नाटक पूरा! चल निकल मेरे घर से, और चली जा अपने आसिक के साथ··· कमीना मन्दिर में पड़ा दम तोड़ रहा है···बरसों बीत गए, अब तक सांठ-गांठ चल रही है।···दम तोड़ता भी तेरे ही नाम की माला जप रहा है···जा, उसके मुँह में गंगाजल तो डाल दे। मरते समय तेरे हाथ से गंगाजल पी ले तो हराम के परान सान्ती से निकलेंगे···जा देख आ, वह मर गया या नहीं···।"[21] गंगा पति की यह कटू उक्तियाँ सूनकर बहुत दुःखी होती है। वास्तव में विवाह उपरान्त उसने अपना पत्नी धर्म अच्छी तरह निभाया था। परंतु पति के मन में निरन्तर उसके प्रति अविश्वास ही रहता है। वह अंत तक अविश्वास को विश्वास में बदलने में कामयाब नहीं हो पायी। अतः अविश्वास की नींव पर खड़ा यह दाम्पत्य जीवन

में कूद कर हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त कर देती है। गंगा के जीवन का अंत अविश्वास तथा संशय बोध के कारण ही होता है। एक बार अगर संशय बोध दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करता है तो अंत तक पति-पत्नी संत्रास पूर्ण जिंदगी जीते हैं। यह बोध तभी समाप्त होता है, जब दोनों में से एक या तो विवाह-विच्छेद कर जाता है, या अपने प्राणों की बलि चढ़ाता है।

सुरेश और चित्रा

"प्रिया" उपन्यास की चित्रा अपने परिवार की परवाह न करते हुए, सुरेश के साथ भाग जाती है, परन्तु सुरेश उसके जीवन का निर्वाह ठीक तरह से नहीं कर पाता। अतः सुरेश से संबंध विच्छेद कर उसे वापस अपनी माँ के पास आना पडता है।[22] युवावस्था में दैहिक आकर्षण के कारणयुवक और युवतियाँ घर छोड़ देते हैं, परंतु आकर्षण का नशा कम होने के उपरान्त जब यथार्थ जिंदगी का सामना करना पड़ता है, क्योंकि प्रेम में अंध बनकर जब कोई निर्णय वे लेते हैं तब उन्हें भविष्य की समस्याओं का बोध नहीं होता। जब वैवाहिक जिन्दगी की असलीयत उन्हें झक झोरने लगती है, तब प्रेम का नशा उतर जाता है, और दाम्पत्य संबंधों में विच्छेद हो जाता है।

निशीथ और ऐन्जेला

"कोहरे" उपन्यास का निशीथ एन्जेला नामक खिश्चन लड़की से विवाह करता है, और उसके साथ विदेश चला जाता है। विदेश जाने पर उसे पता चलता है कि "एन्जेला वाज हैविंग हर ओन अफेयर्स"[23] उसके अपने भी अफेयर थे और इन अफेयरों के कारण उन दोनों के बीच प्यार नाम चीज ही खत्म हो जाती है। जब उनकी बच्ची का नामकरण करने का वक्त आता है, तब दोनों में बच्ची के नाम को लेकर बहुत झगड़ा होता है। निशीथ बच्ची का नाम रंजना रखना चाहता था और एन्जेला उसका नाम ऐलिझाबेथ रखना चाहती थी। विदेश जाकर भी निशीथ हिंदुस्थानी ही रहा। पर उसकी बेटी को खिश्चन बनाया जा रहा था। इस बात को वह सह नहीं पाया और एन्जेला के साथ संबंध-विच्छेद कर पुनश्च अपने घर लौट आया। पाश्चात्य और भारतीय संस्कृति के बीच जो अंतर है, उस अंतर ने

दोनों के दाम्पत्य जीवन की इतिश्री की थी। एन्जेला स्वच्छंद प्रेम और यौन-संबंधों को बढ़ावा देती रही। निशीथ भी कुछ देर तक उस सम्मोहन में अटक पड़ा। पर जब यथार्थता उसके सामने खुल गया, तब उसका सम्मोहन टूट गया और वह भारत लौट आया।

राजनीतिक जीवन-मूल्यों में नये प्रतिमान

किसी भी देश की उन्नति के लिए तथा अखण्डता के लिए एक केंद्रीय शक्ति की आवश्यकता होती है। यह शक्ति प्राप्त करने के लिए चुनाव लड़ने पड़ते हैं। अतः चुनाव लड़ाना राजनीति का एक अत्यावश्यक अंग बन गया है। जिसकी चर्चा विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त होती है। शैक्षिक संस्थाओं में भी राजनीतिक षड़यंत्र अपनाये जाते हैं। राजनीति के लिए नेता लोग अपने परिवार वालों को भी दाँव पर लगाते हैं। उनके चरित्र में चारित्रिक दुर्बलता का समावेश रहता है। केवल धन के बल पर कुछ लोग राजनीतिक सत्ता प्राप्त करते हैं। गुंडा-गर्दी, भ्रष्टाचार, अनैतिक आचरण, नारियों का शोषण करना, उनके जीवन का महत्वपूर्ण मकसद रहा है। यह बात विवेच्य उपन्यासों में स्पष्ट की गयी है। इन नेताओं के सामने न कोई उच्च आदर्श दिखाई देता है और ना ही कोई उच्च उदात्त जीवन-मूल्य।

यशवन्त

"प्रिया" उपन्यास के नेता यशवन्त स्कूल कमिटी के ट्रस्टी थे। उन्होंने अपनी राजनीतिक प्रतिमा ऊँची उठाने के लिए उसी स्कूल की सौदामिनी नामक एक अत्यंत गरीब लड़की के साथ विवाह किया। इस विवाह से कुछ लोग नाराज हुए, परंतु कुछ लोगों ने कहा कि उन्होंने एक गरीब लड़की का उद्धार किया। स्कूल के इस ट्रस्टी ने न जाने कितनी लड़कियों का उद्धार किया होगा।[24] क्योंकि विवाहोपरान्त वे सौदामिनी को नैनिताल ले जाते हैं, और वहाँ एक दिन किसी रियासत के राजा को आतिथ्य के खातिर सौदामिनी को दे देते हैं। पति की इस कुटिल चाल के कारण वह परपुरूष द्वारा शोषित हुई। अपने पति ने राजनीतिक स्वार्थ सिद्धि के लिए उसके साथ विवाह किया यह राज मन ही मन वह समझ लेती है। इस अभिशप्त जीवन की छाया से वह अपनी बेटियों को बचाना चाहती है, परंतु पुनश्च

एक बार पति उसे जाल में फँसाता है, और उसकी बेटी प्रिया को भी दाँव पर लगाता है। इस नरपशू ने सौदामिनी का जीवन तो बरबाद किया ही था पर बेटी को भी नहीं बक्शा। उसे भी जिंदगी भर तड़पन, छटपटाहट और घुटन सहने पर विवश किया। नेता यशवन्त जैसे लोग राजनीति को भ्रष्ट नीति बना रहे हैं। पैसा, सत्ता और उपभोग के लिए वे दूसरों की तथा परिवार वालों की बलि चढ़ाने में आगे-पीछे नहीं देखते। राजनीति तो उनका वह साधन है, जिसके जरिए वे खूब धन इकट्ठा करें, और अनेक नारियों के साथ रंगरेलियाँ मनाते फिरते रहें। इन नेताओं के व्यक्तित्व में देश-प्रेम के स्थान पर पैसा और नारी के प्रति आसक्ति स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती है। ऐसे भ्रष्टचारी नेता के परिवर्तित तथा विघटित जीवन-मूल्यों का चित्रण कर लेखिका ने नेता लोगों का पर्दाफाश किया है।

नीलकान्त

"प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास का नीलकान्त मेहता शहर के सबसे प्रसिद्ध और सम्मानित मेयर है। वे विपुल ऐश्वर्य के धनी है। वे राजनीति में जनता का सेवा के लिए नहीं, अपने व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धि के लिए आये हैं। राजनीति से अधिकार प्राप्त कर अपने लाखों को करोडों में बदलने के लिए आये थे। वे दानशूर जरूर थे, परंतु यह दानशूरता अपने वैभव में चार चांद लगाने के लिए थी। निरंतर आयकर अधिकारियों को फँसाते रहे और अपने विरोध में उठने वालों का मुँह पैसों से बंद करते रहे। राजसत्ता हासिल करने के लिए वे हिंसा पर भी उतर आते थे।[25] अपनी इकलौती बेटी का विवाह राजा मनमोहन राय के बेटे के साथ इसलिए कराते हैं कि वह लोकसभा इलेक्शन में उनका प्रतिद्वंदी न बने। नीलकान्त के व्यक्तित्व में पैसों का नशा तो दिखाई देता ही है, पर साथ ही साथ अनैतिक आचरण उनका मानो जन्मसिद्ध अधिकार बन गया है। राजनीतिक नेता ही अगर जनता के रक्षक के स्थान पर भक्षक बनेंगे तो देश की प्रगति क्या देश भी रहेगा या नहीं ऐसी स्थिति का निर्माण होना स्वाभाविक है। समस्त नैतिक मूल्यों को तिलांजलि देकर राजनीति में अपना स्थान बनाना इन नेताओं का पेशा बन गया है। जनता के प्रति उनके मन में बिल्कुल आस्था नहीं है। जनता की सेवा का आडम्बर कर वे व्यक्तिगत स्वार्थ परिपोषित करते हैं।

सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों में नये प्रतिमान

विवेच्य उपन्यासों में यह स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है कि महानगरीय पात्रों के जीवन में पाश्चात्य संस्कृति में अपना स्थान बना लिया है। पाश्चात्य रहन-सहन, खान-पान, रस्म-रिवाजों को अपनाना इस पात्रों को उचित लगता है। परंपरागत मूल्यों को ठुकराकर पाश्चात्य संस्कृति का स्वीकार करने वाले पात्र शराब पीते हैं, नाचते हैं, विदेशी पोशाक पहनते हैं। परपुरूष और पर-नारी के साथ बाहों में बाहें डालकर नाचते हैं, और उपभोग की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते नज़र आते हैं। इससे सांस्कृतिक अन्तर्विरोध होने लगा है। परिणामतः मूल्यों में परिवर्तन होने लगा है, और नये नये प्रतिमान निर्माण होने लगे हैं।

यशवन्त

"प्रिया" उपन्यास के नेता यशवन्त शहर के सबसे बड़े नेता है। वे अपनी बेटी प्रिया की सगाई प्रसिद्ध बिजनेसमैन श्रीराम आहुजा के बेटे अरूण आहुजा के साथ तय करते हैं। अतः सगाई रस्म होटल कॅन्टिनेन्टल में करना चाहते हैं। होटल कॅन्टिनेंटल ऊँची सोसायटी के लोगों का होटल था। सगाई के दिन प्रिया को ब्युटी पार्लर में भेजा जाता है। वहाँ उसे पाश्चात्य ढंग का मेक-अप कराने के लिए कहा जाता है। जब प्रिया ब्युटीपार्लर से बाहर आ जाती है, तो उसका रूप वर्णन करते हुए लेखिका लिखती है "प्रिया उन्नावी, लाल सितारों से जड़ी साड़ी के अंचल को स्ट्रीविलेस चोली द्वारा ढंके से अधिक खुले वक्ष पर, अन्दाज से सँभालती अरूण आहुजा की आँखों में सीधे देख रही थी। तीन इंच ऊँची सैंड़िल पर तुली-सी उसकी अंग यष्टि का एक-एक उभार उठा था···उन्नत वक्ष और अधिक उन्नत लग रहा था, क्षीण कटि और पतली।[26] प्रिया का यह रूप उसके पति की प्रदर्शन प्रियता और सौंदर्यासक्ति का द्योतक है। एंगेजमेंट रस्म में वह केवल यही चाहता था, कि वह अधिकाधिक मोहक आकर्षण लगे। नारी देह को सजाना, उसका प्रदर्शन करना यह तो अब नित्य की बात बन चुकी है। सगाई रस्म के वक्त सुमधुर संगी की ध्वनियाँ गुँजने लगे। सगाई के बाद हर सांझ प्रिया किसी होटल या किसी क्लब में अरूण के साथ जाने लगी। उपर्युक्त सभी बातों से यह स्पष्टतया नज़र आता है कि, केवल नाम के लिए ही रस्म-रिवाज बाकी है। उसमें जो क्रियाकलाप चलते हैं, वे भारतीय संस्कृति के नहीं तो पाश्चात्य संस्कृति के द्योतक है। सगाई

रस्म होटल में मनाना, शराब पीना, नाचना, विवाहपूर्व ही पति के साथ होटल में रहना ये बातें सांस्कृतिक परिवर्तित मूल्यों को तो स्पष्ट करती ही है, पर सांस्कृतिक नये-नये प्रतिमानों को भी स्पष्ट करती है।

मेजर सिन्हा

"कोहरे" उपन्यास के मेजर सिन्हा अपने जीवन में आधुनिक विचारों को और पाश्चात्य रहन-सहन को, पाश्चात्य ढंग को अपनाना चाहते हैं। वे बार-बार अपनी पत्नी श्यामा को ये बातें कहते रहते हैं। अपने घर पर पार्टी अॅरेंज करते हैं। अपने मित्रों और उनके परिवार वालों को आमंत्रण देते हैं। पार्टी में आने वाली नारियाँ अपनी देह का प्रदर्शन करती रहती है। एक दूसरे के पति के साथ नाचती है। मेजर सिन्हा अर्थात "पापा मिसेस शेफाली चौधरी को दृढता से कसे झूमते से नाच रहे थे - बिना रूके, अनवरत। मेजर चौधरी के साथ मिसेज वर्मा थी, कैप्टेन वर्मा के साथ मिसेज कपूर। सब एक दूसरे के जोड़े के साथ जोडे बनाए थिरक रहे थे।"[27]

मेजर सिन्हा का यह आचरण पाश्चात्य ढंग को प्रस्तुत करता है। वे पोशाख की पाश्चात्य ढंग को ही पहनते हैं। अपने बेटे को होस्टल भेजते हैं। ये सारी सांस्कृतिक अन्तर्विरोध को स्पष्ट करती है। उनका बेटा निशीथ भी पाश्चात्य ढंग से जीना चाहता है, और वह पत्नी को लेकर विदेश चला जाता है। लेकिन वहाँ दोनों के बीच बेटी के नामकरण को लेकर झगड़ा होता है, तो झट से उसे तलाक देकर भारत लौट आता है। यहाँ आकर वह पुनश्च माया चौहान नामक लड़की के साथ इश्क लड़ाता है और जीवन में पुनश्च उपभोग को प्रधानता देकर जीवन यापन करने लगता है। निशीथ का यह व्यवहार, आचरण विदेशी संस्कृति परक है।

धार्मिक जीवन-मूल्यों के नये प्रतिमान

भारतीय जीवन प्रणाली धर्म को आधार बनाकर चलती आयी है। धर्म के माध्यम से ही व्यक्ति को मानव कल्याण एवं आत्म-परिष्कार की प्रेरणा मिलती है, परंतु वर्तमान काल में पाश्चात्य प्रभाव और जीवन की विडम्बना के कारण धर्म

के प्रति मानव मन में अनास्था निर्माण हो रही है। कभी-कभी परंपरागत धार्मिक मूल्यों का स्वीकार तो किया जाता है, परंतु उसका अर्थ तब ध्यान में आता है जब जीवन में अनंत यातनाओं का सामना करने के उपरान्त मनुष्य मन का सच्चा धर्म समझने लगता है। कभी-कभी मानसिक यातनाओं से मुक्ति पाने के लिए भी धर्म की ओट में छिपे रहना मनुष्य पसंद करता है। विवेच्य उपन्यासों में धर्म के प्रति नये प्रतिमानों के दर्शन होते हैं।

श्यामा

"कोहरे" उपन्यास की श्यामा गाँव के जमींदार की बेटी है। छोटी आयु में ही उसका विवाह मेजर सिन्हा के साथ हो जाता है। अनपढ़ श्यामा धर्म और दर्शन की बातें समझ नहीं पाती, लेकिन अपने जीवन में कुछ नियमों का पालन करती है। वह व्रत उपवास इसलिए करती है कि करने चाहिए। लेकिन जब जिंदगी की यथार्थता का बोध होता है, तब वह धर्म का सच्चा रूप समझ जाती है। उसके पति वैवाहिक जीवन के प्रारंभ से ही अनेक नारियों के साथ अवैध सम्बन्ध रखते हैं, पर-पुरूष जात होने के कारण उन्हें रोकने का कुछ हद तक प्रयास करती है, परंतु उसमें सफल नहीं होती। अतः उस बात की ओर दुर्लक्ष करने लगती है। पति के इस आचरण के कारण होने वाली मानसिक यंत्रणाओं से मुक्ति पाने के लिए अपना मन धर्म-कर्म में लगाए रखती है। अचानक एक दिन उसके घर पर मि॰माथुर आते हैं और अपना परिवार बचाने की प्रार्थना करते हैं, क्योंकि उनकी पत्नी मनोरमा तीन बच्चों की माँ होते हुए भी मेजर सिन्हा के साथ अवैध सम्बन्ध रखती है। मेजर भी अपने परिवार की उपेक्षा कर उसे अपनाना चाहते हैं। श्यामा को लगता है, कि अगर अब इस मामले में मैंने जुबान नहीं खोली तो दो परिवार बरबाद हो जायेंगे। इसलिए वह पति को रोकने का प्रयास करती है, पर पति उसकी परवाह किए बिना मनोरमा के पास चले जाते हैं, तब अपनी बेटी के सामने उसने अपने धर्म की यथार्थता स्पष्ट की। जब बेटी पूछती है कि, "क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब नहीं कि व्रत आदि तो सब बहाने हैं - असली धर्म कुछ और ही होता है ?"[28] बेटी का यह कथन सुनकर वह कहती है "हाँ बेटी असली धर्म तो

मन का होता है, लेकिन मन को तपाने से मन कंचन बन जाती है···। मेरी गँवार अकल में यह बात कितनी घंस चुकी है कि निकाले नहीं निकलती···तेरे पापा के नाम पर व्रत उपवास करने में मेरे मन को जो अनोखी शांति या शक्ति मिलती है उसे मैं खोना नहीं चाहती···चाहे तेरे पापा को खो दूँ।"[29] श्यामा का यह कथन उसके घुटन भरे जीवन की शांति के रहस्य को खोल देता है। पति के दुराचरण से त्रस्त श्यामा अनपढ़ जरूर है, परंतु उसने मन के धर्म को ही महत्वपूर्ण माना है। पति की अपेक्षा वह अपने व्रत उपवास आदि को एक नया अर्थ प्रदान करती है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि मानव जीवन में परंपरागत धर्म का अर्थ पूरी तरह ध्यान में आये या न आये पर जीवन की सच्चाई एक असली धर्म को उभारती रहती है। श्यामा की अपनी फिलॉसफी शब्दों के विराट अर्थ को आत्मसात कर चुकी थी। श्यामा ने अपने जीवन में अपने मन के धर्म का पालन किया है। धर्म के दर्शन से वह अनभिज्ञ है।

मेजर सिन्हा

मेजर सिन्हा पाश्चात्य आचार-विचारों से प्रभावित है। वे अपने जीवन में आधुनिकता को स्थान देना चाहते हैं और इसलिए वे अपने इकलौते बेटे को होस्टेल में रखते हैं। उनकी पत्नी श्यामा को लगता है कि बेटे को होस्टेल में रखने से उसका ध्यान माता-पिता से हट जाएगा। उसकी यह बात सुनकर मेजर सिनहा उसे थप्पड जड़ा देते हैं, और कहते हैं कि "कुछ समझती भी हो कि पढ़ाई लिखाई जिंदगी में ऊँचा उठने का मतलब क्या होता है···जीने का ही मतलब क्या होता है। तुम्हारी तरह की घंटा हिलाकर, व्रत उपवास रखकर चौके चुल्हे में सिर देकर क्या मेरी बेटी भी जिंदगी काटेगी···। या मेरा बेटा तुम जैसी किसी ढोल की गले से लटकाकर जिंदगी भर बजाता रहेगा····?"[30] इस कथन से स्पष्ट होता है कि मेजर सिन्हा अपने जीवन में धर्म को बिल्कुल स्थान नहीं देते। वे नव विचारों को प्रधानता देते हैं। परिणामतः मानव जीवन का सच्चा धर्म क्या है, इसके प्रति अज्ञानी ही रहे। अपने जीवन की आचरण प्रणाली में अनैतिकता को बढावा देते रहे।

डॉ·मनसिज

डॉ·मनसिज प्रिया का प्रेमी है। वह अपने जीवन में परंपरागत धर्म को नहीं, तो जमाने के अनुसार चलना ही धर्म है ऐसा मानता है। वर्तमान जीवन की आपाधापी में मनुष्य को इतना वक्त कहाँ कि वह धर्म कर्म की बातें समझ सकेगा ? अतः वह कहता है कि, "एण्ड आई बिलीव इन नो इनहिबिशिन्स और टैबूज···चाँद पर जा उतरने के इस "रॉकेट एज" में मैं तो बैलगाडी पर सफर नहीं कर सकता····। और मन्दिर में किसी पत्थर की प्रतिमा के सामने आँखें मूंदने के ढोंग से, तुम्हारी-जैसी जीती-जागती हाड-मांस की प्रतिमा की आँखों में डूब जाना मनसिज की क्लियर-कट फिलॉसफी है "[31] मनसिज का यह कथन उसका नया दर्शन स्पष्ट कर देता है। वह परंपरागत धर्म और दर्शन के स्थान पर खाओ-पिओ मौज मनाओ दर्शन को अपनाता है। युगानुकूल ये नये प्रतिमान नई पीढ़ी में उभर रहे हैं।

सौदामिनी

"प्रिया" उपन्यास की सौदामिनी प्रतिदिन पूजा तो नहीं करती, लेकिन कभी-कभी अनायास पूजा करती है। जन्माष्टमी के दिन उपवास रखती है, लेकिन मंदिर नहीं जाती। घर में भगवान के चित्र को दो-चार फूल चढ़ाती है। अगरबत्ती की सुगंध को गहरी सांसो में पीती रहती है। वर्षो से उसका यह क्रम रहा है। एक दिन जब वह चित्रा की व्यथा में डूबी थी, तब उसकी बेटी प्रिया उसे जन्माष्टमी के उपवास की याद दिलाती है,। परंतु जीवन की कठोर यातनाओं से क्षत-विक्षत बनी सौदामिनी न उपवास रखना चाहती है, और ना ही शांति की जरूरत महसूस करती है। जिंदगी की कटुतायें आजन्म उसे पीड़ा देती रही है। अतः वह धर्म के प्रति अनास्थावान बन जाती है।

पारिवारिक नैतिकता के नये प्रतिमान

"नीतिशास्त्र" नैतिकता की मीमांसा है। नीतिशास्त्र को धर्मशास्त्र का पर्याय स्वीकार करते हुए नैतिक मूल्यों के अभाव में धर्म की सत्ता गौण मानी गयी

है। समाज के सदस्यों द्वारा स्वीकृत जीवन-मूल्य इसमें संग्रहित रहते हैं और परिवार समाज का ही एक महत्वपूर्ण अंग है। अतः जिन मान्यताओं और धारणाओं का उल्लेख वैदिक काल से किया गया है, वे ही आगे चलकर नैतिक मूल्य बन गये हैं। मानवीय व्यवहार, आचार एवं सामाजिक जीवन को उजागर करने वाले रामायण, महाभारत ग्रंथ नैतिक मूल्यों के अक्षय स्त्रोत माने जाते हैं। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जो भी पुराने मूल्य हो गये हैं, और नवीन मूल्य भी विकसित हुए हैं, प्रतिमान संज्ञा से अभिहित किया जाता है।[32] वर्तमान युग में परम्परागत मूल्यों के स्थान पर नये-नये मूल्य विकसित हो रहे हैं। पुराने मूल्यों के आधार पर ही नये प्रतिमानों का विकास संभव होता है। वर्तमान युग में आध्यात्मिक स्थान पर भौतिकता को स्थान मिला है। उदा·प्रेम, दया, करूणा, सेवा आदि मूल्यों के स्थान पर घृणा, इर्षा, द्वेष आदि भाव विकसित हुए हैं। डॉ·लक्ष्मीकांत सिन्हा का कहना है कि, "फ्राईड़ ने मानसिक धरातल पर की गयी अपनी खोजों से मनुष्य की सोचने, करने और अनुभव करने की शक्तियों में एक नया आंदोलन ही शुरू किया।[33] वास्तव में नैतिकता कोई चिरंतन वस्तु नहीं है। जब-जब भी परिस्थितियों में परिवर्तन होता है तब तक नई नैतिकता का निर्माण होता है। बीसवीं शती में क्रांतिकारी सिद्धान्तों ने नई नैतिकता लाने में सहयोग दिया है। अर्थ व्यवस्था में हाने वाले परिवर्तन में नैतिक मान्यता परिवर्तित की। अतः नैतिक आदर्श ढिला पडा और विलासता आगे बढ़ी। नर-नारी को समकक्ष मानने की प्रवृत्ति बढ़ गई। जाति-पाँति का भेद भाव समाप्त होने लगा। परिणामतः नैतिक मूल्यों के जड़े हिल गयी। सेक्स की मूल्य की प्रेरक शक्ति बन गयी है, और उसका दमन अनुचित बतलाना जाने लगा है, जिससे नई नैतिकता निर्माण होती गई है।

दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों में पुरूष और नारी के जीवन मूल्यों में, नैतिकता में जो बदलावा दिखाई देता है, वही परिवर्तित नैतिकता के प्रतिमानों के रूप में दृष्टिगोचर होता है। परंपरा, रूढी, संस्कृति, सामाजिक बंधन को नये रूप देकर मनुष्य नैतिकता के नये प्रतिमानों को अपनाने लगे हैं।

अनमेल विवाह

आज भी भारतीय संस्कृति में अनमेल विवाह किए जाते हैं। यह अनमेल कभी आयु को लेकर होता है, तो कभी आर्थिक स्थिति को लेकर, कभी शिक्षा को लेकर रहता है, तो कभी सौंदर्य को लेकर। जब ऐसे विवाह हो जाते हैं, तब वैवाहिक जीवन वेदना और पीड़ा से भर जाता है।

शुभ्रा पटेल

"प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास की नायिका शुभ्रा पटेल अपने आर्थिक स्थिति के कारण अपने से दुगुने आयु वाले कोहली की पत्नी बन जाती है। "कोहली के बालों में चाँदी झलकने लगी थी। शुभ्रा के केश अभी एकदम काले थे। आयु में पंद्रह वर्ष का अंतर एकदम स्पष्ट था। लेकिन ब्रिगेडियर कोहली में पद का ही नहीं, वैभव का अभिजात्य भी स्पष्ट था।"[34] कोहली ने शुभ्रा पटेल के बदले में उस परिवार को आर्थिक सहायता प्रदान की। अतः मानसिक धरातल पर, शारीरिक धरातल पर, और आर्थिक धरातल पर दोनों में अनमेल होते हुए भी विवाह किया जाता है।

मेजर सिन्हा

मेजर सिन्हा आधुनिक विचारों वाले और पाश्चात्य जीवन प्रणाली को अपनाने वाले पुरूष थे। उनका विवाह गाँव के जमींदार की अनपढ़ युवति के साथ हो जाता है। अतः पत्नी श्यामा और उनके बीच वैचारिक अनमेल निरंतर बना रहता है। श्यामा भजन-पूजन, व्रत-उपवास आदि में मन रमाती है, तो मेजर सिन्हा नाच-गाना और पीना इसमें मन रमाते हैं। इस अनमेल विवाह के कारण दोनों में निरंतर टकराहट होती है।

त्रिकोणमिती जीवन

त्रिकोणमिती जीवन का अर्थ है, कि विवाहोत्तर पति और प्रेमी दोनों के साथ संबंध बनाए रखना।

अचला

"प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास की अचला विवाह तो नीलकान्त के साथ करती है, परन्तु अपने प्रेमी के साथ भी अपने संबंध बनाए रखती है। इतना ही नहीं तो वह पति को भी आज़ादी देती है कि तुम भी अपनी प्रेमिका के साथ संबंध बनाए रखो।[35] अचला का यह कथन नैतिकता के नये प्रतिमानों को उजागर करता है।

माता-पुत्री संबंध

प्राचीन युग में माता-पुत्री संबंध में स्नेह, ममता दिखाई देती थी। इतना ही नहीं तो माता को देवी के स्थान पर माना जाता था। किंतु आज माता-पुत्री के संबंधों में नये प्रतिमान नज़र आते हैं।

चित्रा

"प्रिया" उपन्यास की चित्रा सौदामिनी की बड़ी बेटी है। वह विद्रोह के माध्यम से माता-पुत्री संबंधों को उद्घाटित करती है। एक ओर सौदामिनी का एकाकी जीवन तो दूसरी ओर अपने ही रक्त-मांस के पुत्री का भविष्य इन्हीं दो स्थितियों के मध्य द्वंद है। सौदामिनी अपनी बेटी को मोहजाल से बचाना चाहती है। परंतु अंधे प्रेम का नशा पूरे व्यक्तित्व पर छा जाने के कारण माता के प्रति विद्रोह बनी वह मॅटिनी देखने चली जाती है। इतना ही नहीं तो माँ को धमकाती भी है कि,-अब बार-बार जाऊँगी। नीतिमूल्यों को तोड़कर वह माता पर हाथ उठाने की भी धमकी देती है। चित्रा के चरित्र से स्पष्ट हो जाता है कि अब स्नेह, दया, करूणा, प्रेम जैसे मूल्यों के स्थान पर घृणा, द्वेष जैसे नव-मूल्य विकसित होने लगे हैं।

पिता-पुत्र संबंध

पिता-पुत्र के गहरे आत्मीय संबंधों के बीच भी दरार निर्माण होने लगी है, जिसका वर्णन विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त होता है। "कोहरे" उपन्यास का निशीथ मेजर सिन्हा का सबसे बड़ा बेटा है। वह पापा से भी बढ़कर आधुनिक है। पाश्चात्य

प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर छाया हुआ है। अतः वह अत्यधिक व्यक्तिवादी बन गया है। पिता-पुत्र के संबंधों में कटुता, तनाव, औपचारिकता का निर्माण हो गया है। "एन्जिला" नामक क्रिश्चयन लड़की से विवाह कर उसे घर ले आता है। परंतु दोनो निरंतर झगडते रहते हैं। परिणामतः घर की चीजे टूटने लगती हैं। तब पापा उसे फटकारते हैं। पापा की फटकार के कारण क्रोधित होकर वह पापा का घर छोड़कर चला जाता है और जाते-जाते यह भी कहता है कि, "आपका स्वर्ग आपको मुबारक हो।"[36] आधुनिक युग के युवा पुत्र अपने माता-पिता की परवाह नहीं करते। वे माता-पिता के मूल्य को नहीं जानते। परिणामतः मूल्य परिवर्तन हो जाता है। परंपरागत रूप से माता-पिता को भगवान तुल्य माना जाता था। परंतु वर्तमान काल में भगवान की बात तो दूर इन्सान के नाते भी व्यवहार नहीं किया जाता है। पिता-पुत्र संबंधों के बीच यह नव-धारणा विकसित हो रही है।

मातृत्व नव्य-बोध

नारी प्रसव धर्मिणी है। प्रकृति ने दिए हुए वरदानों में से यह सर्वश्रेष्ठ वरदान उसे मिला है। इसी वरदान से मनुष्य जीवन की अखंडता बनी रही है। नारी जीवन की अंतिम सार्थकता मातृत्व प्राप्ति में ही है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन-मूल्य यह है कि विवाह के उपरान्त ही नारी का मातृत्व स्वीकार किया जाना चाहिए। लेकिन विवेच्य उपन्यास में मातृत्व के प्रति एक नव्य बोध प्राप्त होता है। नारी अनैतिक संबंधों से भी मातृत्व प्राप्ति में सार्थकता मानती है। कभी-कभी पति की ओट में छिपकर वह अपने विवाह-पूर्व प्रेमी से मातृत्व प्राप्त करना चाहती है।

अचला

"प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास की अचला नीलकांत की पत्नी है। वह विवाहोपरान्त अपने पति की औलाद की जन्म देती है। उस बच्चे के जन्मोपरांत कुछ ही महिनों में पति दूसरे बच्चे की कामना करता है। तब वह कहती है कि, "क्या मैं बच्चा

पैदा करने की मशिन हूँ। एक लडकी काफी है। मैं भी तो पापा की अकेली संतान थी।"[29] अर्थात वह अपने पति के बच्चों को जन्म देना नहीं चाहती थी, पर विवाह बंधन के कारण विवश होकर उसे अनचाहा मातृत्व प्राप्त होता है। वह अपने पति के प्रति प्रतिशोध की भावना से भर जाती है, क्योंकि उसका पति उसे विवाह-पूर्व प्रेमी से संबंध रखने के लिए नकार देता है। इससे नाराज होकर वह पति को स्पष्ट रूप से कहती है कि, "मेरे पेट में जो गर्भ है, वह विनय का है। मैं अपनी प्रेमी के बच्चे को जन्म देना चाहती हूँ। पति की ओट में छिपकर प्रेमी से मातृत्व चाह रखना यह नैतिकता का नया प्रतिमान है। प्रेमी की निशानी वह निरन्तर अपने पास रखना चाहती है।

विधवा नारी की मातृत्व कामना

भारतीय संस्कृति में पति की मृत्यु के उपरान्त मातृत्व चाह रखना अनैतिक माना जाता है। परंतु कभी-कभी परिस्थितिवश नारी इस अनैतिकता का स्वीकार कर मातृत्व प्राप्त करना चाहती है।

जया

"प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास की जया बालविधवा नारी है। वह नीलकान्त के घर में अचला की सेविका बनकर काम करती है। नीलकान्त की नज़र उस पर पड़ जाती है, और एक रात वह अपनी कामपिपासा तृप्त करने के लिए उसकी कोठरी में चला जाता है। उसके आने का मंतव्य जानकर पहले तो वह भयभीत होती है, पर बाद में कहती है कि, "आप जबरर्दस्ती नहीं, खुशी से अपना लीजिए···। मैं बाल विधवा हूँ न। मुझे अभी तक किसी ने मैला नहीं किया है···अब आपके छूने के बाद में उम्र भर किसी को हाथ लगाने नहीं दूँगी। बस इतना चाहती हूँ।"[39] जया का यह कथन नैतिकता का नया प्रतिमान है। वह अपने स्वामी की सेविका तो है पर स्वामी की अंतरंग सेविका बनने की चाह उसके मन में दबी रहती है। वह नीलकांत के बच्चे को जन्म देती है, और उसका भरण-पोषण करने के लिए गाँव चली जाती है। विधवा नारी की कोख से बालक का जन्म होना अनैतिक माना जाता है। परंतु मातृत्व के लिए वह समाज के लांछन सहना पसंद करती है।

इतना ही नहीं तो अपने शिशु का भरण-पोषण भी करती है।

वैज्ञानिक प्रगति के प्रति नयी दृष्टि

आज का युग वैज्ञानिक युग है। विज्ञान के विविध क्षेत्रों में प्रगति की है। अतः हर एक बात अब विज्ञान की कसौटी पर कसी जाती है। विज्ञान ने चिकित्सा क्षेत्र में भी विशेष योगदान दिया है, और बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियंत्रण करने हेतु विविध उपायों का निर्माण किया है। परंतु आय ये उपादान नई नैतिकता को जन्म दे रहे हैं। नारी अवैध संबंध से प्राप्त मातृत्व से छुटकारा पाने के लिए विज्ञान का सहारा लेती है, तो विवाहोपरान्त सहारा लेती है। विवाहोपरान्त भी संतान प्राप्ति को एक बंधन के रूप में मानने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है। विवेच्य उपन्यासों में ये नये प्रतिमान प्राप्त होते हैं।

प्रिया

"प्रिया" उपन्यास की प्रिया नेता यशवंत की पुत्री है। नेता यशवंत एक कुटील राजनीतिज्ञ है। उन्होंने अपनी सुंदर युवा बेटी को भी अपने लाभ के लिए मानो बेच दिया। श्रीराम आहुजा के बेटे अरूण आहुजा के हाथ में उसे सौंप कर उसका नारित्व लुटाने की परमिशन दे दी। परिणामतः प्रिया गर्भवति रह जाती है। अरूण आहुजा उसे छोडकर विदेश चला जाता है। तब नेता यशवंत सौदामिनी को खबर देते हैं कि "प्रिया का अॅबॉर्शन करवा देना और उसे कहना कि सब कुछ भूल जाए।"[40] यशवंत का यह कथन नैतिकता के नये प्रतिमान को उजागर करता है। वैज्ञानिक प्रगति मानव कल्याण के हेतु निर्मित है, परंतु मनुष्य अमानवीय बनकर यदि उससे अनुचित रूप में स्वीकार करे तो वह मनुष्य की भूल है। भ्रूण हत्या करना आज सहज संभव है। परंतु प्रिया का जीवन जो उस घटना से बरबाद हुआ उससे छुटकारा कैसे मिल सकता है। मानवीय संबंधों में जो असुरी प्रवृत्ति निर्माण हो रही है, उसका पर्दाफाश करने की कोशिश लेखिका ने की है।

नि ष्क र्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जाता है कि -

1· वर्तमान काल में पारिवारिक मूल्यों में तेजी से परिवर्तन दिखाई देता है, अब विवाह के लिए युवा और युवतियों को परिवार की अनुमति लेना आवश्यक नहीं लगता, क्योंकि वे विवाह-पूर्व ही प्रेम और यौन-सम्बन्ध रखते हैं।

2· आज के भारतीय परिवेश में विवाह बन्धन शिथिल हो गया है, क्योंकि विवाहोत्तर प्रेम और यौन-सम्बन्ध की स्वतंत्रता विविध नारी-पुरूष पात्रों में पायी जाती है।

3· अर्थासक्ति और अर्थाभाव के पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

4· आज दाम्पत्य सम्बन्धों में भी परिवर्तन नजर आता है, एकनिष्ठता के स्थान पर अनेकनिष्ठता, सहचार्य के स्थान पर दास्यत्व और पति की ओट में छिपकर अवैध संबंध आदि अनेक आयाम इन संबंधों में परिलक्षित होते हैं।

5· पारिवारिक नैतिकता के नये प्रतिमान भी उजागर हुए हैं, अनमेल विवाह, त्रिकोण मिती जीवन, पिता-पुत्र सम्बन्ध, मातृत्व नव्यबोध आदि नैतिकता के नये प्रतिमान दिखाई देते हैं।

6· आज धार्मिक जीवन मूल्यों में परिवर्तन दिखाई देता है। हर एक मनुष्य का अपने मन का धर्म बलवति होना चाहिए, यह धर्म के प्रति नई दृष्टि उजागर हो रही है।

7· आत्मनिर्भरता के लिए तथा विविध समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए आज की नारी नौकरी के क्षेत्र में प्रवेश करती दिखाई देती है। परिवार तथा बच्चों का भरण-पोषण करने के लिए वह अर्थार्जन करती है, कभी-कभी आजन्म अविवाहिता रहकर अर्थार्जन करती है।

8· आज के राजनीतिक नेता, भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी, नारी शोषण और पारिवारिक मूल्यों का विघटन करके दिखाई देते हैं। सत्ता के लिए हिंसा का मार्ग अपनाते हैं।

9· आज सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों में परिवर्तन दिखाई देता है भारतीय संस्कृति के स्थान पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव जनमानस पर स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है।

संदर्भ-ग्रंथ-सूची

1· संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ - चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद, पृ·194

2· मानक हिन्दी कोश - रामचंद्र वर्मा, पृ·427

3· हिन्दी विश्व कोश, पृ·1969

4· समसामयिक हिन्दी कहानी में बदलते पारिवारिक सम्बन्ध - डॉ·ज्ञानवति अरोड़ा, सं·1989, पृ·75

5· प्रिया - दीप्ति खण्डेलवाल, 1976, पृ·124

6· वही, पृ·33

7· कोहरे - दीप्ति खण्डेलवाल, 1977, पृ·13

8· वही, पृ·12

9· प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1978, पृ·36

10· प्रिया - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1976, पृ·126-127

11· वही, पृ·115

12· कोहरे - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1977 पृ·81

13· वही, पृ·100

14· प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1978 पृ·53

15· वही, पृ·70

16· वही, पृ·53

17· प्रिया - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1976, पृ·99

18· प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1978, पृ·45

19· कोहरे - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1977, पृ·27

20· वही, पृ·27

21· प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1978, पृ·29

22· प्रिया - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1976, पृ·150

23· कोहरे - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1977, पृ·87

24· प्रिया - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1976, पृ·115

25· प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1978, पृ·94-9 5

26· प्रिया - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1976, पृ·125

27· कोहरे - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1977, पृ·38

28· वही, पृ·77

29· वही, पृ·77

30· वही, पृ·47

31· प्रिया - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1976, पृ·140

32· हिन्दी उपन्यास तीन दशक - डॉ·राजेन्द्र प्रताप, सं·1983, पृ·16

33· हिन्दी उपन्यास का उद्‌भव और विकास - लक्ष्मीकान्त सिन्हा, सं·1966, पृ·167

34· प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1978, पृ·44

35· वही, पृ·53-54

36· कोहरे - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1977, पृ·48-49

37· प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1977, पृ·82

38· वही, पृ·83

39· वही, पृ·56

40· प्रिया - दीप्ति खण्डेलवाल, सं·1976, पृ·129